



Sarvesh



Sakshi

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121579504

पुल्लिंग :	लिंग	: स्त्रीलिंग
06/03/1997 :	जन्म तिथि	: 23/09/2001
गुरुवार :	दिन	: रविवार
घंटे 20:45:00 :	जन्म समय	: 20:42:00 घंटे
घटी 36:14:18 :	जन्म समय(घटी)	: 37:23:20 घटी
India :	देश	: India
Maharajanj :	स्थान	: Delhi
27:09:00 उत्तर :	अक्षांश	: 28:39:00 उत्तर
83:34:00 पूर्व :	रेखांश	: 77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व :	मध्य रेखांश	: 82:30:00 पूर्व
घंटे 00:04:16 :	स्थानिक संस्कार	: -00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00 :	ग्रीष्म संस्कार	: 00:00:00 घंटे
06:15:16 :	सूर्योदय	: 06:10:01
17:59:10 :	सूर्यास्त	: 18:16:34
23:49:04 :	चित्रपक्षीय अयनांश	: 23:52:35

विंशोत्तरी  
चन्द्र 3वर्ष 10मा 19दि  
गुरु  
24/01/2026  
24/01/2042

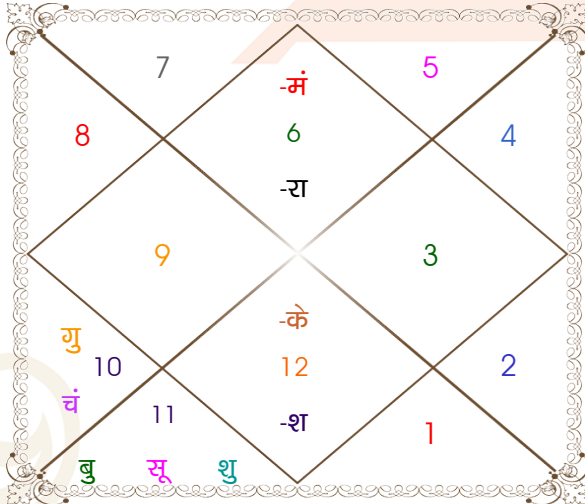
गुरु	13/03/2028
शनि	25/09/2030
बुध	31/12/2032
केतु	07/12/2033
शुक्र	07/08/2036
सूर्य	26/05/2037
चन्द्र	25/09/2038
मंगल	01/09/2039
राहु	24/01/2042

अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश
29:53:18	कन्या	लग्न	मेघ	26:25:46
22:16:29	कुंभ	सूर्य	कन्या	06:46:53
18:09:03	मक	चंद्र	वृश्चि	27:56:58
06:57:04	कन्या व	मंगल	धनु	14:17:43
17:47:30	कुंभ	बुध	तुला	02:34:46
16:11:56	मक	गुरु	मिथु	19:19:02
15:30:29	कुंभ	शुक्र	सिंह	09:13:34
13:25:43	मीन	शनि	वृष	21:04:58
04:55:35	कन्या व	राहु व	मिथु	08:01:42
04:55:35	मीन व	केतु व	धनु	08:01:42
13:04:44	मक	हर्ष व	मक	27:35:04
05:18:01	मक	नेप व	मक	12:16:38
11:47:01	वृश्चि	प्लूटो	वृश्चि	18:55:31

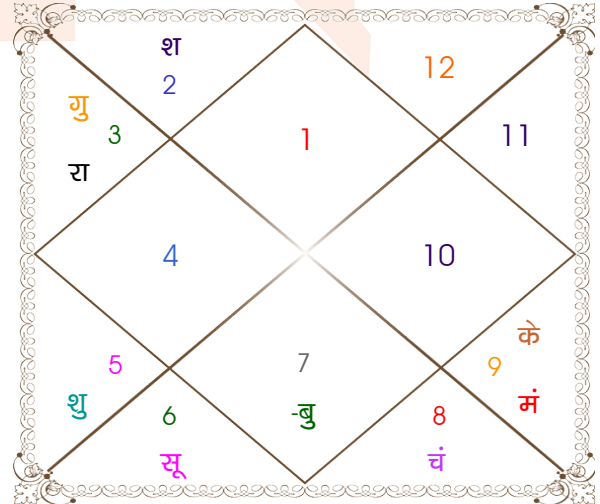
विंशोत्तरी  
बुध 2वर्ष 7मा 11दि  
शुक्र  
06/05/2011  
06/05/2031

शुक्र	05/09/2014
सूर्य	05/09/2015
चन्द्र	06/05/2017
मंगल	06/07/2018
राहु	05/07/2021
गुरु	05/03/2024
शनि	06/05/2027
बुध	06/03/2030
केतु	06/05/2031

लग्न-चलित



लग्न-चलित



## अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	जलचर	कीटक	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	वानर	मृग	4	2.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	मंगल	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	राक्षस	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	मकर	वृश्चिक	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	आद्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
<b>कुल :</b>			<b>36</b>	<b>21.00</b>		

Sarvesh का वर्ग मार्जार है तथा रीप का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Sarvesh और रीप का मिलान शुभ है।

### मंगलीक दोष मिलान

Sarvesh मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

**कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा ।  
न मंगली मंगल राहु योग ।**

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं राहु Sarvesh कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

रीप मंगलीक नहीं है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में नवम् भाव में स्थित है।

**त्रिषट् एकादशे राहु त्रिषट् एकादशे शनिः ।  
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत् ।**

वर या कन्या की कुण्डली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुण्डली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु रीप कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

Sarvesh तथा रीप में मंगलीक मिलान ठीक है।

## निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम है।

